

## विद्यासागरजी ने नुकसान बताए तो सैकड़ों लोगों ने लिया प्रण - सप्ताह में 1 दिन मोबाइल नहीं चलायेंगे

चातुर्मास अवधि में सेवारत कार्यकर्ताओं के सम्मान समारोह पर  
आचार्यश्री के प्रेरणादायी उद्गार -



मैंने यह कार्य किया ऐसा मत कहो। काम तो सब हो रहे हैं बस अपने अपने दायित्व निभाते जाओ। संकल्प और विकल्पों की आवश्यकता ही नहीं होनी चाहिए। संयोजना सही होती है तो कार्य भी उसी के अनुरूप होता जाता है।

यह प्रेरणादायी उद्गार नेमावर में विराजमान आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ने चातुर्मास अवधि में सेवारत कार्यकर्ताओं के सम्मान समारोह के अवसर पर व्यक्त किये। प्रातःकाल की बेला में चातुर्मास अवधि में सेवारत खातेगांव, हरदा, अजनास, संदलपुर, नेमावर बानापुरा, इन्दौर के कार्यकर्ता और समाजजनों ने विद्यासागरजी की पूजा के अवसर पर उन्हें श्रीफल समर्पित किये। वहीं ट्रस्ट कमेटी ने कार्यकर्ताओं के सम्मान स्वरूप उनसे आचार्यश्री की पूजन में अष्टद्रव्य समर्पित करवाया। आचार्यश्री ने कहा आप कर्तव्य करेंगे ठोस सफलता निश्चित ही प्राप्त होगी। जिसका जैसा पुण्य होगा कार्य भी वैसा ही होगा यह निश्चित है। अरिहंत देव द्वारा बताई गई विधि से कर्तव्य करेंगे तो हम भी कर्म को जड़ मूल से उखाड़ फेंकने में समर्थ होंगे। आप लोगों को नाम उल्लेख ज्यादा नहीं करना चाहिए। हमारा आशीर्वाद तो हमेशा कार्य के लिए होता है कर्ता के लिए नहीं। आचार्यश्री ने मोबाइल के दुरुपयोग और भविष्य में उससे होने वाली हानियों के बारे में बताते हुए कहा आज विद्यालय में शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों ही मोबाइल के कारण अपने मार्ग से भटक रहे हैं। मोबाइल का सीमित उपयोग होना चाहिए। बच्चों को इस अपव्यय से बचना चाहिए, लेकिन इसके लिए आवश्यक है कि पहले माता पिता स्वयं इस मोबाइल रुपी बीमारी से बचे। बड़ी बड़ी कंपनियों के सीईओ भी अपने बच्चों को मोबाइल के प्रयोग से रोकते हैं। आज लोग गर्भ में बच्चा आते ही उनके लिए मोबाइल खरीद लेते हैं। मोबाइल के कारण खान-पान, रहन-सहन सबकुछ बिगड़ रहा है। मोबाइल समय, धन और बुद्धि तीनों को प्रदूषित कर रहा है। अतः इन सबसे बचने के लिए मोबाइल का प्रयोग सीमित करना होगा। आचार्यश्री के वचनों से प्रेरित होकर विद्यासागर कॉलेज के संचालक आलोक जैन और हरदा नगर पालिका अध्यक्ष सुरेन्द्र जैन सहित सैकड़ों श्रद्धालुओं ने सप्ताह में एक दिन मोबाइल का उपयोग नहीं करने का संकल्प लिया।

## शिखरजी वंदना पर बरतें सावधानी

शांतिकुमार जैन, गंजबासौदा। जैन समाज का शाश्वत तीर्थ श्री सम्मेशिखरजी में जहां देशभर से श्रद्धालु 27 कि.मी. की वंदना करने आते हैं। 9 कि.मी. चढ़ाई, फिर 25 टोंको के लिए 9 कि.मी. की वंदना तथा पार्श्वनाथ टोंक से 9 कि.मी. की उतराई के लिए श्रद्धालु रात्रि में 2 बजे चढ़ना शुरू करते हैं। कुछ कमजोर, वृद्ध लोगों को छोड़कर सभी अपने पैरों पर गाते झूमते वंदना करते हैं। इस वंदना के लिए कहा भी गया है कि एक बार बन्दे जो कोई ताहि नकर-तिर्यच गति न होई। दिगम्बर हो या श्वेताम्बर, बीसपंथी हो या तेरहपंथी, मूर्तिपूजक हो या स्थानकवासी, सभी पूरे उत्साह से यहां वंदना करने आते हैं।



आज आपको एक सावधानी के साथ चेतावनी भी देना चाहेंगे। गर्मियों में पहाड़ पर तीव्र तपन होने के कारण वंदना नहीं हो पाती, इसलिये अक्टूबर से फरवरी तक यहां श्रद्धालुओं की भीड़ बढ़ जाती है। आपके लिये यह जानना तब महत्वपूर्ण हो जाता है जब पता चले कि पिछले दिनों में यहां वंदना करते कई तीर्थयात्रियों की मृत्यु हो चुकी है। और न ही यह कहिये उनका भला हुआ, अच्छी गति मिलेगी। असमय मृत्यु भी ठीक नहीं होती। गतवर्ष मैसूर की 46 वर्षीय सुनीता जैन की वंदना शुरू करते ही, नागपुर के 60 वर्षीय सिंघई जैन की आदिनाथ टोंक के पास हृदय गति रुक जाने के कारण और नागपुर के 26 वर्षीय युवा आदित्य पहोरे की पहली टोंक गौतम गणधर पर हालत बिगड़ने पर हुई। उन्हें डोली से नीचे भी लाया गया पर चिकित्सा के दौरान दम तोड़ दिया।

अब यहां पर दो बातों पर ध्यान दें, हादसे की संभावना उन लोगों के साथ अधिक होती है जो पहाड़ की ठंड को कमतर आंकते हैं। इस क्षेत्र में ठंड का असर भारत के अन्य भौगोलिक क्षेत्रों से कई अधिक होता है जिसे हम यात्रा प्रारंभ में अनुभव नहीं कर पाते हैं। रात्रि में जब 2 बजे वे वंदना के लिये चलते हैं तो 3-4 कि.मी. बाद ठंडी हवायें खून की धमनियों पर असर डालती हैं। चलते रहने से गर्माहट के कारण ठंड का अनुभव न होने के कारण वे ऐसे हादसे के शिकार हो जाते हैं। दूसरी बात यह कि जब आपको ऐसा लगे कि आपके सीने में तेज दर्द हो रहा है और वह दर्द आपके जबड़ों तक पहुंच जाता है, हृदय विशेषज्ञों ने इसका एक प्राथमिक इलाज बताया, जब आपके पास अगले चंद सैकेंड बहुत महत्वपूर्ण होते हैं, जोर जोर से सांस लें और एक जोर की खांसी, इतनी तेज की मुंह से थूक निकले, जब तक मदद न आये उसको दोहराये, जोर की सांसे फेफड़ों में ऑक्सीजन पैदा करती है और खांसी की वजह से दिल सिकुड़ता है जिससे ब्लड सर्कुलेशन नियमित होता है।

शिखरजी में चिकित्सा सुविधायें भी काफी सुधारने की आवश्यकता है। आप जब भी वंदना करने तो ठंड से बचिये, पूरे गरम कपड़े पहनकर रात्रि 2 बजे की बजाय देर से वंदना की शुरुआत करें।

## नवदाम्पत्य जीवन की हार्दिक शुभकामनाएँ



चि. आदित्य

सुपौत्र : स्व. श्री आनंदकुमारजी-स्व. श्रीमती गुलाबबाई जैन  
सुपुत्र : अजीतकुमार-सौ.संगीता जैन (वेद), इन्दौर

सौ.कां. सौनिका

सुपौत्री : स्व. श्री मांगीलालजी-श्रीमती गुणमाला जैन  
सुपुत्री : शाह श्री अनिलकुमारजी-सौ. शकुन जैन, गुना

का मंगल परिणय

दिनांक 20 अक्टूबर 2019 को अक्षत गार्डन, इन्दौर में संपन्न।

प्रतिष्ठान - \* आनंदकुमार चुन्नीलाल जैन (वस्त्रकुटी) \* श्री सन्मति उद्योग (आनंद दंत औषधी) \* अरिहंत मोटर्स \* न्यू फैशन हब \* वेद मेचिंग सेंटर